आसरा - हिंदी कविताएँ

परिवर्तनशीलता प्रकृति का शास्वत नियम है, क्रिया की प्रक्रिया में मानव जीवन का चिरंतन इतिहास अभिव्यंजित है।

रविवार, 7 अगस्त 2016

माँ की यादें

(स्वर्गीय माँ को समर्पित)

ऑफिस से जब घर आता हूँ
वही माँ का कमरा
जिसमें वह बैठी रहती थी
अब सूनापन नजर आता है।

बैड पर बैठी रहती थी माँ
कुछ न कुछ कहती रहती थी माँ
न जाने कहाँ चली गई माँ
अब सूनापन नजर आता है।

कमरे में दाखिल होते ही
माँ की पहली आवाज
आज भी बहुत याद आती है
अरे गुडिया पानी ले आ।

आज नहीं आती आवाज
सिर्फ रहता है उनका अहसास
महसूस होती है उनकी आवाज
अरे गुडिया पानी ले आ।

जब वह थी, तब लगता था
क्यों बकबक करती रहती है माँ
आज जब नहीं है तो लगता है
क्यों हमारे पास नहीं है माँ।
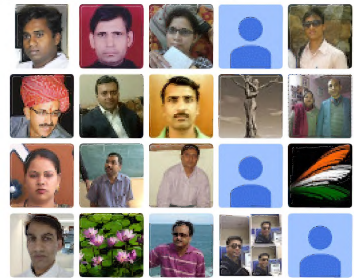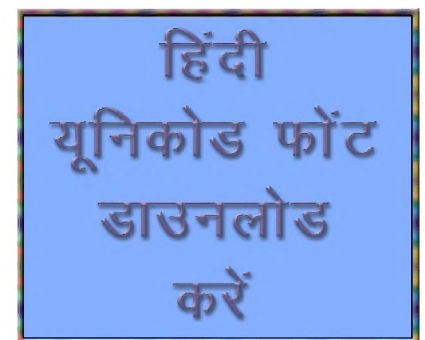
ब्लॉग अभिलेखागार

माँ जब पास नहीं होती
याद आती है उसकी चिंताएँ, अच्छाइयाँ
उसकी कहावतें, उसकी गहराइयाँ
याद आती है उसकी हर बात।

याद आता है वो माँ का
त्यौहारों पर लड्डू बाँटना
चुपके से अपना भी हिस्सा
हम सभी में बाँटना
अब सूनापन नजर आता है।

आज माँ जब है नहीं
त्यौहार भी फीका लग रहा
लड्डू भी तीखा लग रहा
मन भी कहीं न लग रहा।

लोग हैं घर में बहुत
माँ जैसा कोई सच्चा नहीं
सबके चेहरों पर हैं चेहरे
माँ के रूप जैसा अच्छा नहीं।

जब मैं होता था मुश्किलों में
मुझको सहारा देती थी तुम
आज भी हैं मुश्किलें, पर साथ मेरे तुम नहीं
तेरी यादों के सहारे, मुश्किलें सुलझाता हूं मैं।

आज भी आती हो तुम, बच्चों को सहलाती हो तुम
पास मेरे बैठकर, प्यार दिखलाती हो तुम
जब सपना मेरा टूटता है, दूर चली जाती हो तुम
बहुत रूलाती हो तुम, बहुत रूलाती हो तुम।

याद रखना दोस्तो
है सबसे गुजारिश मेरी
माँ बहुत है कीमती, बार-बार मिलती नहीं
माँ है जिनके पास, कभी दूर अपने से करना नहीं।
अंतिम समय हो माँ का जब, पीछे कभी हटना नहीं।

प्रस्तुतकर्ता अवधेश कुमार पर 7:07:00 pm

G+1 +3 Google पर इसकी अनुशंसा करें

लेबल: अपनी रचनाएँ
Location: India India

4 टिप्पणियां:

Sufian 10 अगस्त 2016 को 4:53 pm

dil ko chhu jane wali kavita!

उत्तर दें

उत्तर

Avdhesh Kumar 10 अगस्त 2016 को 5:00 pm

धन्यवाद सर, ब्लॉग के लिए आपका सहयोग एवं आशीर्वाद अपेक्षित है।

उत्तर दें

गम
अलविदा
मरी हुई आत्माएँ
कहां गइला रजऊ
माँ की यादें
जिन्दगी से मुलाकात

► July (3)

लोकप्रिय लेख

माँ की यादें
(स्वर्गीय माँ को समर्पित) ऑफिस से जब घर आता हूँ वही माँ का कमरा जिसमें वह बैठी रहती थी अब सूनापन नजर आता है। बैड पर बैठी...

पलभर की सांस
यह कविता उस बच्ची को समर्पित है, जो पैदा होते ही मृत्यु की गोद में समा गई। कवियत्री : निर्मल राज नौ महीने कोख में रखकर दर्द...

बेटियों का वजूद
यह मेरी बेटी का छायाचित्र है। सरकारी अस्पताल में जब माँ ने बच्चे को जनम दिया उसने देखा उसकी कोख से बेटी ने जन्म लिया उ...

जिन्दगी से मुलाकात
एक दिन हमको राह में मिल गई यूं जिन्दगी हमने उसको धर दबोचा आज पकड़ में आई जिन्दगी हमने पूछा ये बताओ कहां से आ रही तुम जिन्द...

कर्म का चक्कर
जो होना है वो होता है फिर तू क्यों बंदे रोता है इस बात से ये न समझ लेना जो तू कर्म करे वो धोखा है जब तक है प्राण तेरे तन में ...
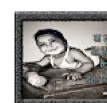
प्यारा सा बचपन
यह मेरे बचपन का छायाचित्र है। न झूठ न फरेब न ही कोई धोखा ऐसा होता है यह प्यारा सा बचपन वो पल में रूठना पल में ही मान जाना ...

मैट्रो का सफर
मैट्रो का निर्माण हुआ है देखें कितना सुधार हुआ है बसों की भीड़ न हो पाई कम देखें चिल्लम-चिल्ली हरदम। मैट्रो में भी भीड़ है ...

मरी हुई आत्माएँ
आज के इंसान का जमीर इतना गिर गया खुद तो जिंदा है मगर, अंतरात्मा से मर गया शिक्षा-विद्या में बहुत, आगे वो बढ़त...

पराई थी, हूं, रहूंगी
साभार एक स्त्री के कदम, जब पड़े अपने विवाहित संसार में, उसने सभी को स्वीकारा अपने पति के परिवार में। सास-ससुर, नंद, देवर जेठ-जेठा...

आज तो है
कवियत्री : निर्मल राज कल ना हमारा है ना किसी और का कल तो सिर्फ अपना है जो जीता है अपने लिए बड़ी शान से जो आज है जीवन...

संपर्क

नाम

ईमेल *